# गधा

लेखक : जॉर्ज

लेखक : जॉर्ज

जब में छोटा था तब हम ऊपर की मंज़िल पर एक फ्लैट में रहते थे. मेरे सभी दोस्त मुझ से बहुत दूर रहते थे. इसलिए मैं घर पर अकेले ही खेलने को मज़बूर था. एक बार में मैं कितनी सीढ़ियां कूद सकता था? एक घंटे में मैं कितनी मक्खियां मार सकता था? मैं सिर्फ यही खेल खेलता रहता था. अक्सर मैं अलग-अलग कपड़े पहनकर अलग-अलग पात्र बनने की कोशिश करता था.
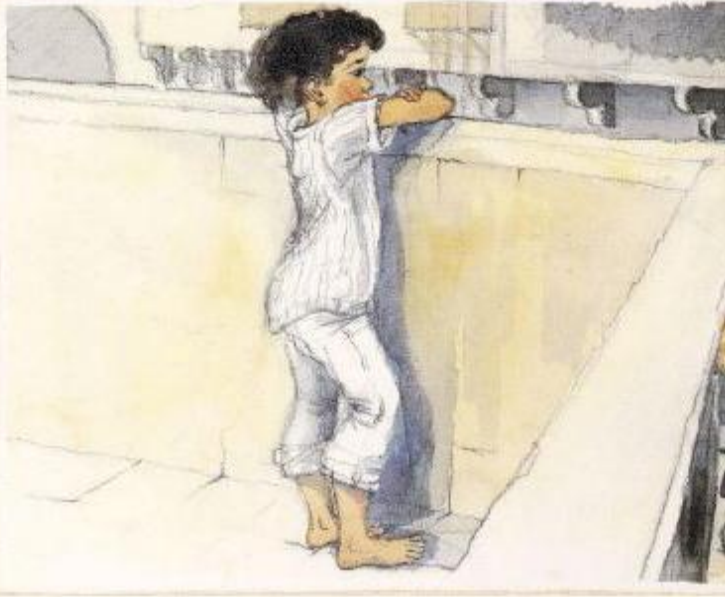
एक बार गर्मियों पर में मैं बिल्कुल बोर हो गया. अब मैं खुद से अकेले खेलना नहीं चाहता था. जब मुझे बहुत अकेलापन महसूस होता, तब मैं अपना सारा समय बालकनी में खड़े रहकर गुज़ारता था. बालकनी में से मुझे नीचे का भीड़ भरा बाजार नज़र आता था. नीचे की सड़क लोगों से खचाखच भरी होती थी - लोग चीज़ें खरीद-बेंच रहे होते थे. कई फलों और सब्ज़ी वालों की दुकानों से गधे बंधे होते थे. मैं खड़ा-खड़ा घंटों उन गधों को निहारता था. किसी दिन मेरा भी एक गधा होगा, मैं यह सपना देखता था.
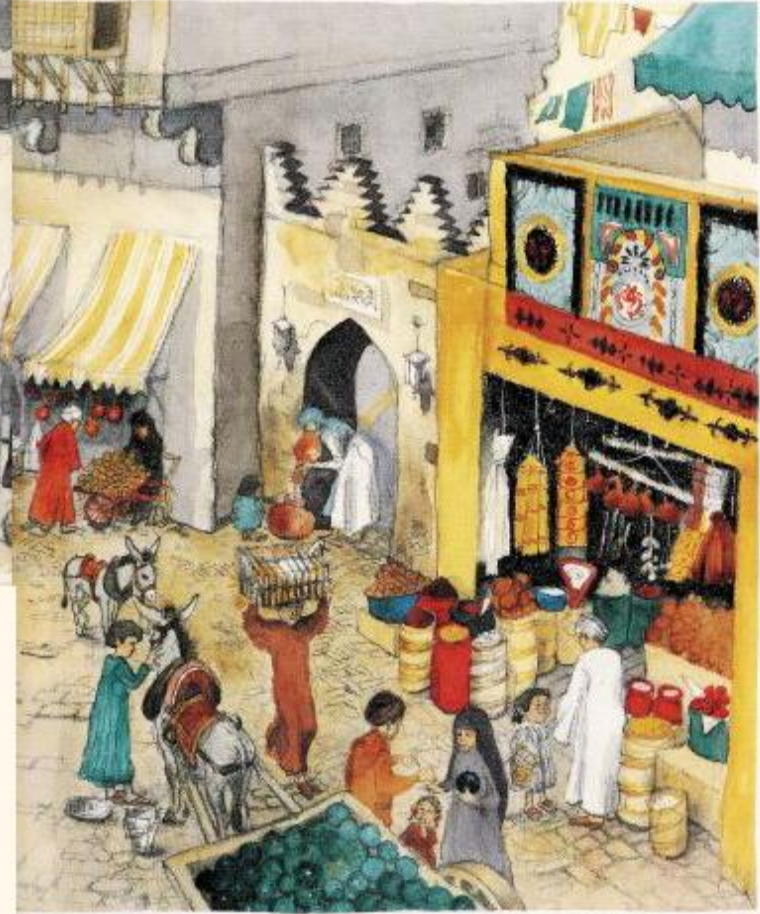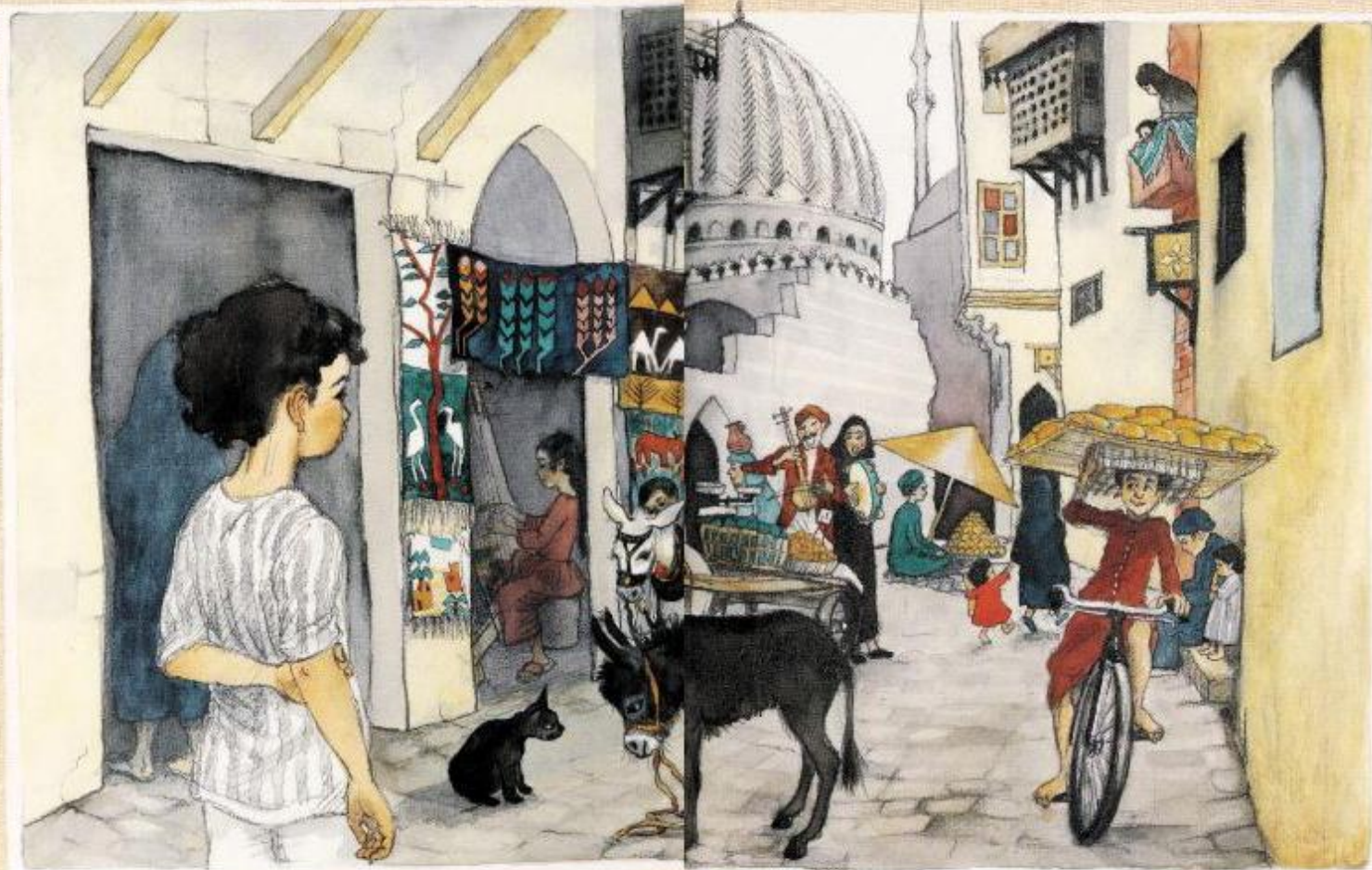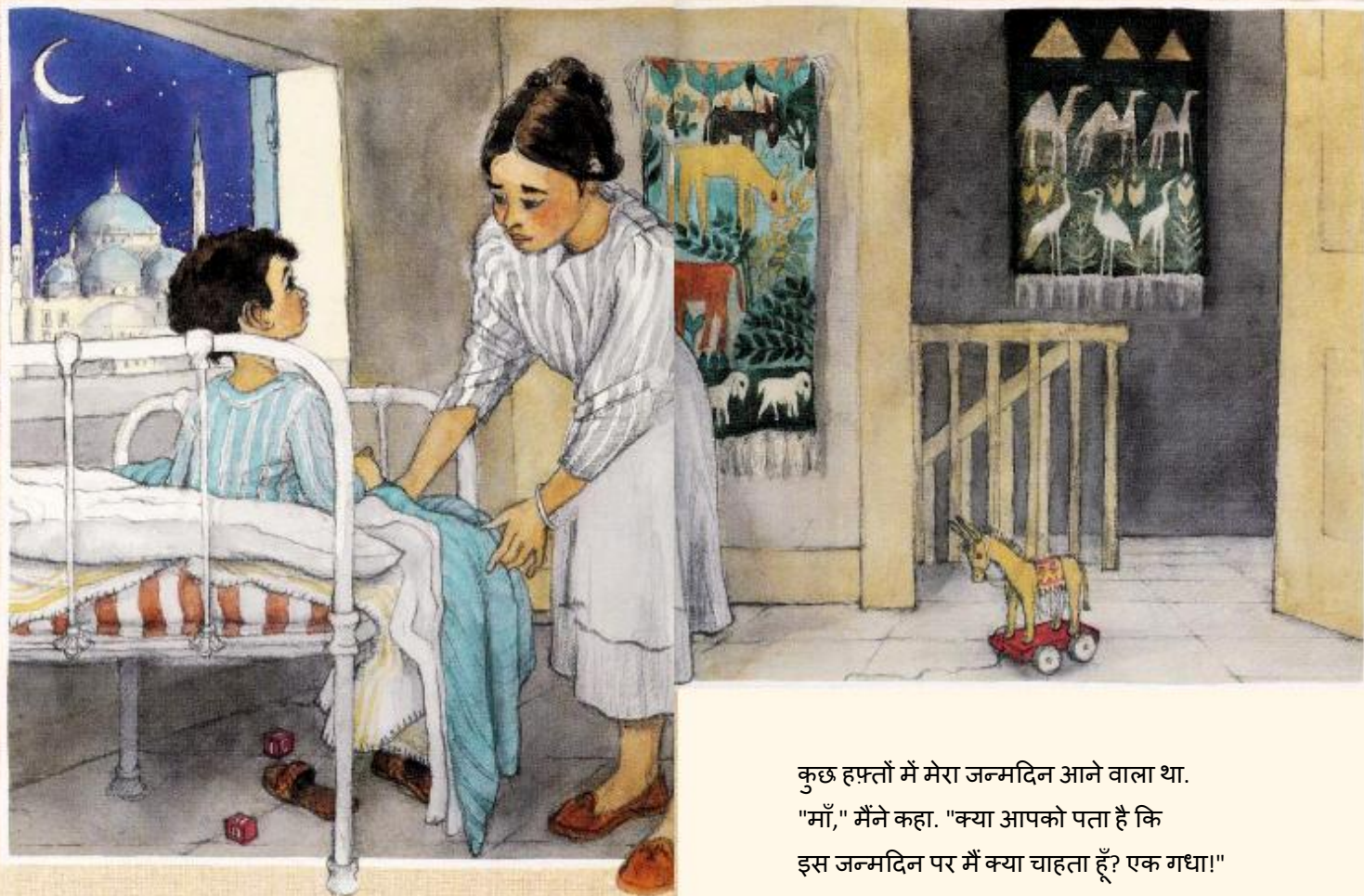
कुछ हफ़्तों में मेरा जन्मदिन आने वाला था.
"माँ," मैंने कहा. "क्या आपको पता है कि
इस जन्मदिन पर मैं क्या चाहता हूँ? एक गधा!"
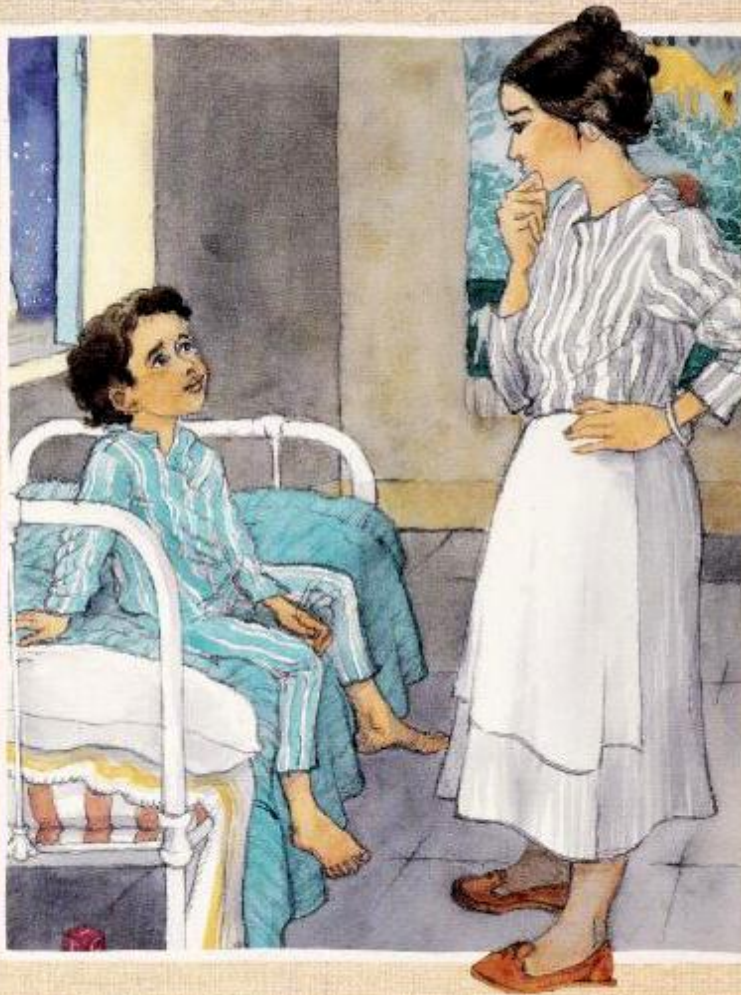
यह सुनकर माँ को बहुत आश्चर्य हुआ. उन्हें कोई जवाब ही समझ में नहीं आया. फिर उन्होंने कहा, "असंभव! तुम्हें गधा हरगिज़ नहीं मिलेगा."

मैं गधा न मिलने का कारण जानना चाहता था.

उन्होंने कहा कि क्योंकि गधा बहुत महंगा होगा, इसलिए वो उसे खरीद नहीं पाएंगे.

"गधा खरीदने के लिए मुझे सारा पैसा बचाना होगा. उसके साथ-साथ कोई और नौकरी भी करनी पड़ेंगी."

"फिर घर में किसी को खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं मिलेगा."

मैंने कहा कि मैं अपना खाना गधे के साथ बांटा करूंगा.

फिर माँ ने कहा कि गधे को रखने की घर में कोई जगह नहीं थी.

मैंने कहा कि मैं उसे अपने कमरे में रखूंगा.

माँ ने कोई जवाब नहीं दिया. उससे मुझे लगा कि मैं बाजी जीत गया था.
पर कुछ देर बाद माँ ने ऊंची आवाज़ में कहा, "तुम्हारा पूरा आईडिया ही हंसने लायक है! क्या तुम भूल ही गए कि हम तीसरी मंज़िल पर रहते है? गधे सीढ़ियां नहीं चढ़ते हैं!"

इससे मेरा दिल ही टूट गया. मुझे यह नहीं पता था कि गधे सीढ़ियां नहीं चढ़ सकते हैं. इसलिए जब तक हम ऊपरी मंज़िल पर थे, तब तक मुझे किसी हालत में गधा नहीं मिल सकता था.
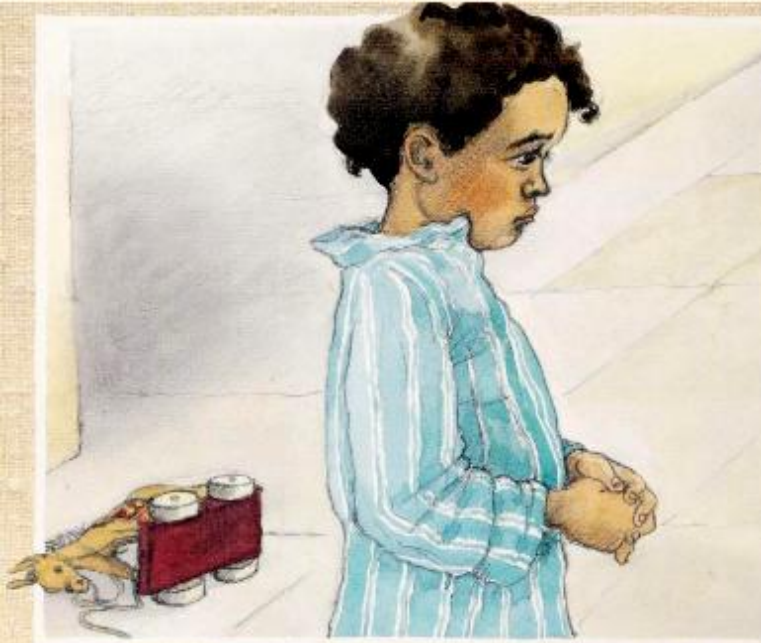
एक दिन शाम को मैं बालकनी में खड़ा होकर नीचे देख रहा था. तब मुझे एक रोचक चीज़ दिखी. एक छोटा गधा सड़क पर अकेले घूम रहा था. वो इधर-उधर रूक-रुककर फेंकी हुई सब्ज़ियां खा रहा था. उस पर किसी का ध्यान नहीं था.
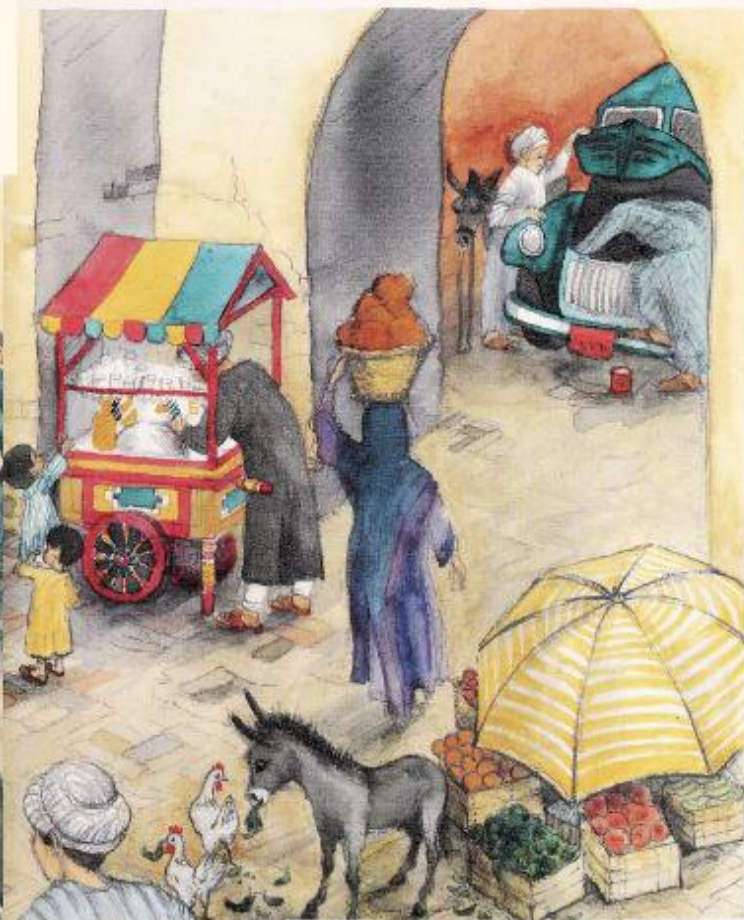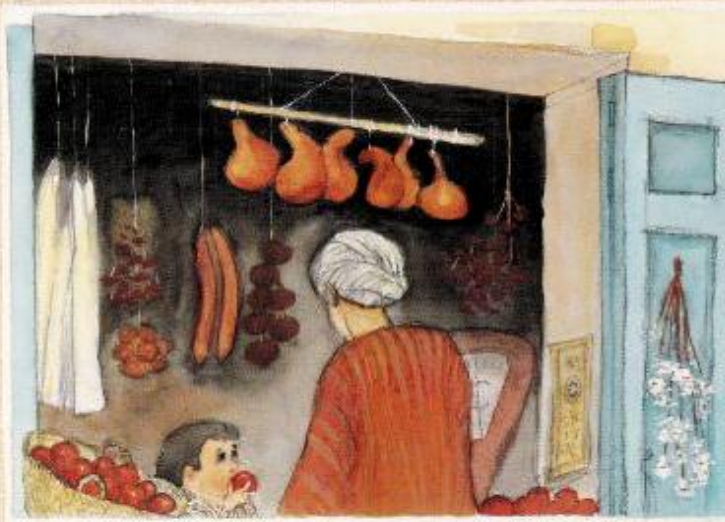
फिर मैं तेज़ी से सीढ़ियां उतरकर नीचे गया. सड़क पर मैं उस छोटे गधे के पास पहुंचा. मैं उसके पास धीरे-धीरे गया जिससे कोई मुझे शक की निगाह से न देखे.

मैंने गधे के माथे को बड़े प्यार से सहलाया. उसने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे मैं उसका कोई पुराना दोस्त हूँ. मुझे नाली में पड़े पत्तागोभी के कुछ ताज़े पत्ते दिखे. मैंने उन्हें गधे को खाने को दिए. उसने उन्हें बड़े चाव से खाया. वो बहुत भूखा था, क्योंकि वो और पत्तों के लिए मेरी ओर बढ़ा. उसकी पहुँच से कुछ दूर मैंने उसे एक और पत्ता दिखाया. इस तरह मैं धीरे-धीरे उसे भीड़ में से अपने घर की सीढ़ियों के पास ले आया.
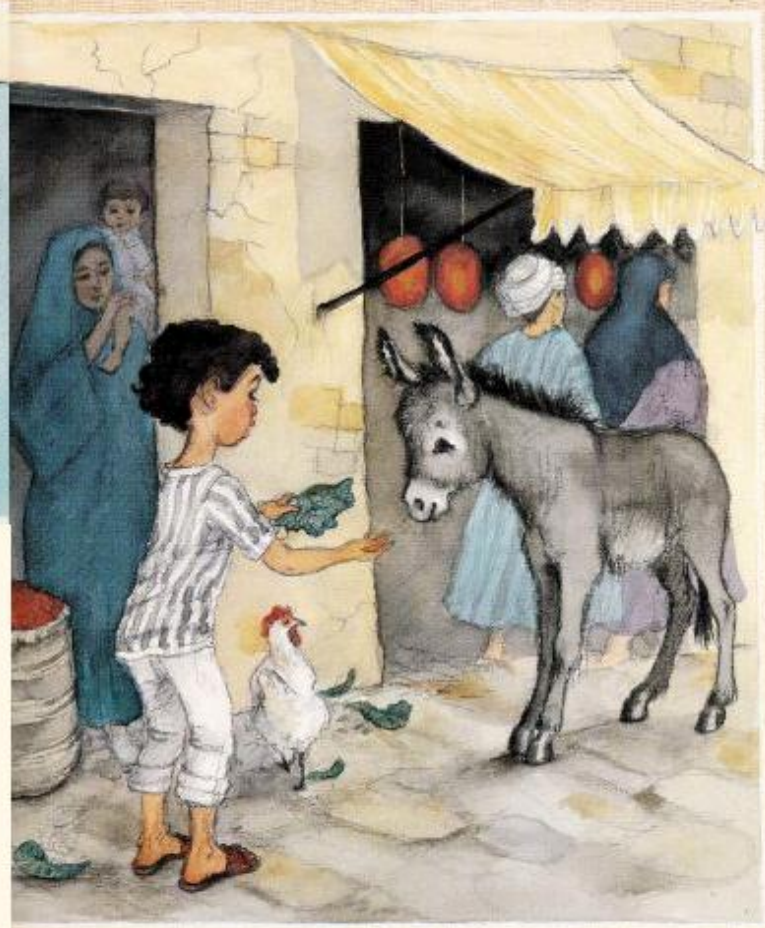
फिर मैंने गधे को मोड़कर उसका सिर सीढ़ियों की तरफ किया.

"काश, मैं उसको सीढ़ियां चढ़ना सीखा पाता," मैंने सोचा.

मैंने गधे के पीछे जाकर उसे आगे धकेलने की कोशिश की. मैंने उसकी पीठ पर अपना हाथ रखा. पर इससे पहले मैं कोई धक्का देता, गधा अपने पिछले दोनों पैरों से कूदता हुआ सीढ़ियां चढ़ने लगा. मुझे बड़ा ताज़्ज़ुब हुआ. मैं उसके पीछे-पीछे दौड़ा. मुझे अपनी आँखों पर बिल्कुल यकीन नहीं हुआ.

अंत में मैंने उसकी पूँछ पकड़ी और रेलिंग पर पैर रखकर उसे रोका. फिर उसका गला पकड़कर मैं धीरे से उसे अपने घर के दरवाज़े के पास ले गया.

एक हाथ से मैंने जेब में से, घर की चाभी निकाली. फिर घर का ताला खोला. गधा मेरे साथ-साथ घर में अंदर घुसा. मैंने गधे की गीली नाक को प्यार से चूमा. मैंने कई बार उसके गले को सहलाया. फिर मैं उसे अपने कमरे में ले गया.
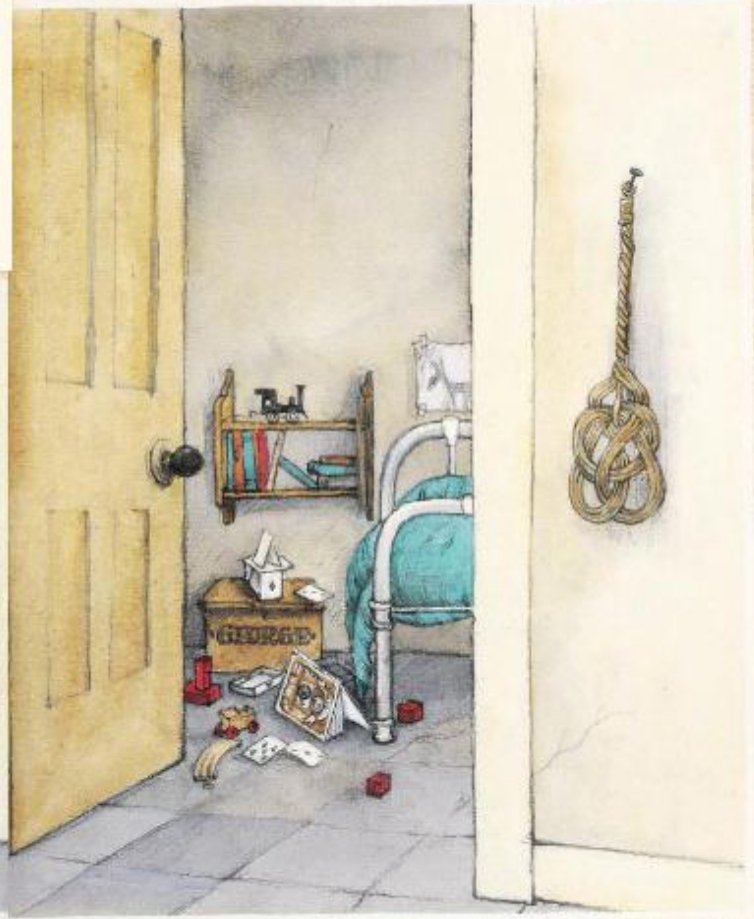
उस शाम माँ, बाजार से कुछ खरीदने गईं थीं. जब मैंने उन्हें बाहर से घर का ताला खोलते हुए सुना तब मैं दौड़ा हुआ माँ के पास गया.

"माँ! माँ!" मैं ख़ुशी से चिल्लाया. "मैं आपको आश्चर्य में डालना चाहता हूँ!"

माँ ने मुझे अपने रास्ते से हटाया और फिर उन्होंने सामान से लदे भारी थैले नीचे रखे. उस दिन बेहद गर्मी थी और माँ सामान उठाते-उठाते पूरी तरह थक गईं थीं.

"जाओ, बाहर जाकर खेलो," माँ ने मुझसे कहा. "क्या तुम्हें मेरी थकान दिखाई नहीं देती?"

"पर माँ, मैं तुम्हें एकदम चकित करना चाहता हूँ," मैंने कहा. "अच्छा, तुम अपनी आँखें बंद करो, और उन्हें तभी खोलना जब मैं कहूँ. माँ, कृपाकर एक बार तो मेरी बात मानो!"

फिर थकी हुई माँ ने एक कराहट के साथ अपनी दोनों आँखें बंद कीं.

मैं दौड़ा हुआ अपने कमरे में गया और अपने पीछे-पीछे गधे को लेकर आया. गधे का मुंह मैंने सीधे माँ की ओर किया. दोनों की नाकें एक-दूसरे को लगभग छू रही थीं.

"अब आँखें खोलो!" मैंने माँ से कहा.

माँ ने अपनी आँखें खोलीं.

कुछ क्षणों तक माँ और गधा एक-दूसरे को घूरते रहे. फिर माँ ज़ोर से चिल्लाने लगीं और गधा भी चीखने लगा. उनकी आवाज़ बहुत कर्कश थी.

कुछ देर के बाद जब शोर कुछ कम हुआ तब मैंने कहा, "यह मेरा गधा है."

"उस नाचीज़, गंदे जानवर को मेरे घर से तुरंत बाहर निकालो!" माँ चीखीं.

"पर माँ, मैंने वो गधा खुद खोजा है," मैंने कहा. "और वो वाकई में बहुत होशियार है - वो बिना किसी मदद के खुद सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आया!"

"तुम्हारा गधा क्या कर सकता है उससे मुझे क्या लेना-देना! उसे अभी नीचे उतारो और बाहर छोड़कर आओ!" माँ ने आदेश दिया.
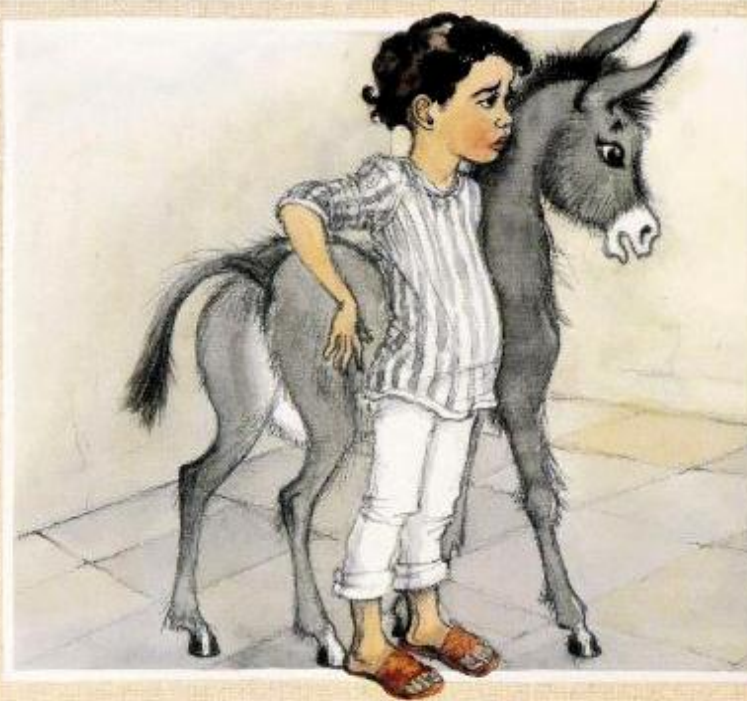
माँ ने एक रस्सी ढूंढी और उसे तुरंत गधे के गले में बाँधी. फिर एक हाथ में कालीन साफ़ करने वाला पंखा लेकर माँ ने हम दोनों को सीढ़ियों के नीचे धकेला.

जैसे ही हम सड़क पर उतरे, वैसे ही एक बूढ़ा हमारे पास दौड़ा हुआ आया.
"अरे! वो तो मेरा गधा है!" वो माँ पर चिल्लाया.
"तुम खुशनसीब हो," माँ ने बूढ़े आदमी से कहा. "मेरे बेटे को तुम्हारा गधा लावारिस घूमता हुआ सड़क पर मिला. उसने इतनी देर तुम्हारे गधे की देखभाल की."
"क्या तुम उनके बेटे हो?" बूढ़े आदमी ने मुझसे पूछा. मैंने "हाँ" कहकर अपना सिर हिलाया.
"तब तुम बहुत ही अच्छे और प्यारे लड़के हो," बूढ़े आदमी ने कहा. उसने अपनी जेब से एक चांदी का सिक्का बाहर निकाला और मुझे थमा दिया.
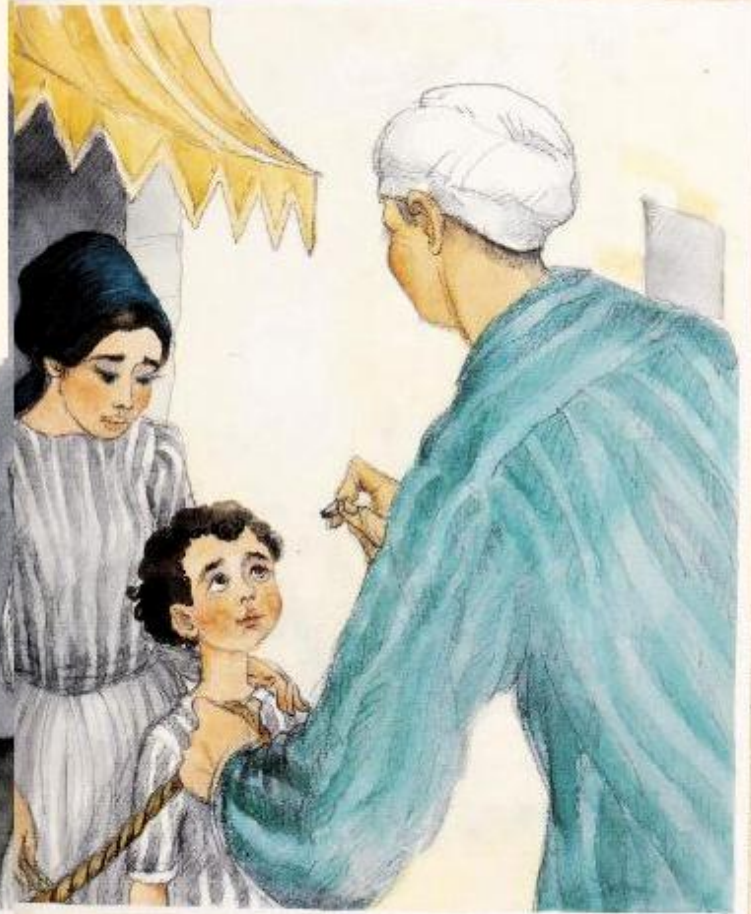
उसके बाद मैं कई हफ़्तों तक रोता रहा. हमने उस दिन की बात फिर कभी नहीं छेड़ी. पर उससे मेरा गधों के प्रति प्यार और लगाव बिल्कुल कम नहीं हुआ. आज भी अगर मुझे कोई गधा दिखता है तो सबसे पहले मैं उसका माथा सहलाता हूँ. फिर मैं उसके गले में अपने हाथ डालता हूँ - और अगर कोई देख नहीं रहा है - तो मैं उसकी नाक को चूमता हूँ!

समाप्त